International Journal of Professional Development
Vol.11,No.1, Jan-June2022 ISSN: 2277-517X (Print),2279-0659 (Online)
Impact Factor: 3.148 (IFSJI)

एक आपदा एवं पर्यावरण प्रबन्ध व्युह रचना: एक अध्ययन

Santosh Kumar Dhakar
Research Scholar, Dept. of Geography
JRN Rajasthan Vidyapeeth (deemed to be University)
Udaipur, Rajasthan

औद्योगिकरण की कई सारी समस्याएं भी है इतना सरल नहीं है, औद्योगिकरण/मूलभूत सुविधाओं जैसे सडक बिजली, पानी, परिवहन एवं सुरक्षा का अभाव, कच्चे माल की कमी, राजकीय क्षेत्र में घाटा, औद्योगिक इकाइयों का घाटे चलना, उद्योगो का क्षेत्रीय संकेद्रण, पूंजी का अभाव, सरकारी नीतियां आदि।

व्युह रचना अर्थात् नियोजन का अर्थ पहले से यह निश्चित करन है कि भविष्य में क्या करना है तथा कैसे करना है? यह प्रबंध के आधारभूत कार्यो में से एक है।

पर्यावरण सम्पूर्ण वाह्य परिस्थितियों एवं प्रभावों का जीवधारियों पर पड़ने वाला सम्पूर्ण प्रभाव है जो उनके जीवन विकास एवं कार्यो को प्रभावित करता है।

मानव व्यवसाय : मानव अपनी आजीविका के लिए कार्य करता है, मानव व्यवसाय कहलाता है।

प्राथमिक व्यवसाय : ऐसे क्रियाकलाप जिससे हमें कच्चा पदार्थ प्राप्त होता है।

उदाहरण : खनन, मत्स्यन , वानिकी , खेती-बाड़ी, पशुपालन।

द्वितीयक व्यवसाय: जहाँ पर प्राथमिक क्रियाकलाप से कच्चा पदार्थ प्राप्त कर उसमे परिवर्तन व परिभाजन तो इससे मूल्य में बढ़ोतरी हो जाती है। उदाहरण : ऊर्जा उत्पादन , प्रसरकण, विनिर्माण उद्योग आदि।

तृतीय व्यवसाय : प्राथमिक व द्वितीयक को जोड़ता है वह तृतीय क्रियाकलाप होता है।

उदाहरण : व्यापार, परिवहन, संचार, सेवाएँ वाणिज्य। सेवा : सार्वजिक , व्यक्तिगत।

चतुर्थ व्यवसाय : ऐसा क्रियाकलाप जिसमे प्राथमिक , द्वितीय और तृतीय तीनो को फायदा पहुचाया जाता है इसमें वृद्धि व कोशल दोनों का उपयोग होता है। उदाहरण: अनुसन्धान सूचना।

पंचम : यह क्रियाकलाप वृद्धि आधारित होता है जो प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीय व चतुर्थ की मदद करता है। उदाहरण : परामर्शदाता, विशेषज्ञ, निति आधारित, निर्णयकर्ता

प्रश्न: मानव व्यवसाय किसे कहते है ? मानव व्यवसाय का वर्गीकरण कर प्रत्येक के तीन तीन उदाहरण लिखिए।

उत्तर: मानव व्यवसाय: मानव अपनी आजिविका के लिए जो भी काम करता है उसे मानव व्यवसाय कहते है।

प्राथमिक क्रियाकलाप : इसमें निम्न वर्ग शामिल है-

- खेती व बाड़ी
- खनन
- पशुपालन
- मत्स्य

द्वितीयक क्रियाकलाप: इसके वर्ग निम्न है-

- उद्योग
- प्रसकरण
- ऊर्जा उत्पादन
- विनिर्माण

तृतीय क्रियाकलाप: इसका वर्गीकरण निम्न प्रकार है -

- सूचना आधारित
- अनुसंधान एवं विकास आधारित

पंचम क्रियाकलाप: ये निम्नलिखित है-

- विशेषज्ञ
- निर्णयकर्ता
- परामर्शदाता
- निति निर्धारण

प्रागैतिहासिक काल: इस काल में मानव जंगली जानवरों का शिकार करता था तथा जंगलो में कंद-मूल , फल संग्रहण करता था। इस काल में सिमित जनसंख्या व सिमित आवश्यकतायें थी। मानव

जंगली अवस्था में ही रहता था। शिकार नुकीले पत्थरों व लकड़ी के डण्डो से करता था। इस काल मे शिकार में कुत्ता , मानव का सहायक बना। यह प्राथमिक क्रियाकलाप से जुड़ा है।

प्राचीन काल: लोहा, ताम्बा व कांसा जैसे मजबूत धातुओं की खोज की जिससे वह उपयोगी हथियार व सामान बनाने लगा। इस काल में कृषि के साथ साथ कुटीर उद्योगों का भी तेजी से विकास हुआ यह भी जब तक प्राथमिक क्रियाकलाप से ही जोड़ा था।

मध्यकाल: 600 ईस्वी से 1500 ई. के बीच की अवधि को मध्यकाल के अंतर्गत शामिल किया जाता है। यूरोप में इस काल में मानव व्यवसायों में विविधता बढ़ी बढती शिक्षा, व्यापार तथा सांस्कृतिक विकास के कारण बड़े बड़े नगरो का विकास हुआ व्यापार में वस्तुओं का विनिमय होता था।

आधुनिक काल: आद्योगिक क्रियाओं के लिए वृहत स्तर पर विभिन्न खनिजो जैसे लौह अयस्क, ताम्बा, जस्ता व सीसा आदि का खनन वैज्ञानिक रीती से होने लगा। ऊर्जा के विभिन्न साधनो से ऊर्जा की प्राप्त के कारण वृहत स्तर पर उद्योगो में विभिन्न वस्तुओं का निर्माण होने लगा। विकास के उच्च स्तर पर पहुँचे। विकसित देशो के लोग चतुर्थक व पंचम व्यवसायों से अधिक जुड़े है।

प्राथमिक व्यवसाय

- आखेट
- संग्रहण
- मछलीपालन
- पशुपालन
- कृषि
- खनन
- लकड़ी काटना

आखेट व संग्रहण: प्राचीनतम प्राथमिक व्यवसाय है और यह जनजातियो के द्वारा किया जाता है। प्रोद्योगिक व तकनीके निम्न स्तर की है-

प्रारूप

1. क्या
2. पूंजी व तकनिकी
3. साधनों की आवश्यकतायें
4. क्षेत्र मानचित्र
5. भौतिक विशेषता
6. अन्य विशेषता

1. किसी भी जंगली जानवर शिकार या पकडकर खाना आखेट कहलाता है।
2. इस व्यवसाय में पूंजी व तकनिकी निम्न स्तर की लगती है।
3. इस व्यवसाय में हाथो के बनाये हुए ही साधन काम में लिए जाते है।
4. क्षेत्रो:
   - कनाडा के ट्रणडा और टेगा प्रदेश में एस्किमो।
   - उत्तरी साइबेरिया में बसने वाले सेमोयाड तुग, याकुत, माझ चकर्च, कोश्याक आदि जनजातियो द्वारा।

3. इस व्यवसाय में हाथो के बनाये हुए ही साधन काम में लिए जाते है।

क्षेत्रो:

- कनाडा के ट्रणडा और टेगा प्रदेश में एस्किमो।
- उत्तरी साइबेरिया में बसने वाले सेमोयाड तुग, याकुत , माझ चकर्च , कोश्याक आदि जनजातियो द्वारा।
- कालाहारी मरुस्थल में तुश्मैन जनजाति द्वारा।
- कोंगो वेसिन में पिग्मी जनजाति द्वारा।
- मलाया में समाग व सकाई जनजाति द्वारा।
- वोर्नियो में पुतान द्वारा।
- युगिनी में पापुआन द्वारा
- अमेजन वेसिन में जिगरो व यागुआ जनजाति द्वारा।

अतिशितित व अत्यधिक गर्म प्रदेशो में रहने वाले लोग आखेट द्वारा जीवन यापन करते है। यह कठोर कार्य जलवायु दशाओ में घुक्कड़ जीवन जीते हुए किया जाता है।

भारत में शिकार पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया गया है , केवल विशिष्ट प्रदेशो के निवासी आखेट से जीवन यापन करते है।

वर्तमान परिस्थितियों में कई प्राकृतिक एवं मानव जनित स्थितियाँ हैं, जो कि विकास की सामान्य गति को प्रभावित करती हैं, जिनमें प्रमुख निम्न हैं

- अशिक्षा के कारण जागरूकता का अभाव
- सहभागिता का अभाव एवं स्थानीय राजनीति
- कठिन पहुँच कठिन भौगोलिक परिवेश
- संवेदनशील पर्यावरण
- तकनीकी जानकारी व उपयुक्त मानव क्षमता का अभाव
- सही आकड़ों एवं सूचना तकनीकी का अभाव
- अनुपयोगी व अकुशल विकासात्मक ढाँचा?
- धन का अभाव
- क्रियान्वयन एजेंसी एवं ग्रामीणों में परस्पर संशय का भाव

इनके अतिरिक्त स्थान विशेष की अपनी भी कुछ व्यावहारिक क ठिनाइयाँ हो सकती है।

पर्यावरण नैतिकता प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह पर्यावरणीय शुद्धता तथा संरक्षण पर सर्वाधिक ध्यान दे। पर्यावरणीय समस्याओं को समझने के लिये शिक्षित होना भी आवश्यक है। वर्तमान समय में सूचना त था संचार साधनों के विकास के कारण संसार के किसी भी कोने में घटित होने वाली घटना चारों ओर तीव्र गति से पहुँच जाती है।

इसी प्रकार विद्यालय में अध्ययनरत छोटे-छोटे विद्यार्थियों को जब शिक्षकों द्वारा गलत काम के लिये मना किया जाता है तो वे उनके प्र ति सचेत हो जाते है तथा अपने गुरूजनों की आज्ञा का पालन करते

औद्योगो द्वारा प्रदूषण

औद्योगिकरण एक ऐसा स्तर है जो देश को आत्म निर्भर बनाता है लोगों मंे उन्नति की भावना पैदा होती है। जितनी अधिक उद्योगों की उन्नति होगी उतना ही अधिक इससे प्रदुषण भी फैलेगा। हम सामान्यतः इसे वायु प्रदुषण से जोड देते है परन्तु यह उससे कई अधिक भयानक है। कारण भी सामने है उद्योगों से होने वाली विभिन्न प्रक्रियाएं जैसे चिमनीयों से हनिकारक गैसो का निकलना, बहुत छोटे छोटे कण निकलना। कुछ कण व पदार्थ ऐसे भी होते है जो चिमनीयों में रह जाते है बाहर नहीं निकल पाते है। कुछ उद्योगों में जो जल काम में लिया जाता है उसे बाहर खुले में छोड दिया जाता है जिसके अन्दर कई हनिकारक चीजे मिली होती है। किसी भी प्रक्रिया के तहत काम में आया हुआ बचा हुआ सामान भी बाहर निकाल दिया जाता है। जिस ईधन का प्रयोग उद्योगों में किया जाता है उसके अवशेष। इन सभी प्रक्रियों से अपशिष्ठ पदार्थों को पर्यावरण में छोडने से प्रदुषण फैलता है।

औद्योगो के प्रदुषण के नुकसान

उद्योगों से होने वाली प्रत्येक प्रक्रिया का हमारे पर्यावरण पर और मानव समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालते है। जैसे चिमनीयों द्वारा खराब गैसों के बहिस्त्राव से वायु प्रदुषण होना। जल उपयोग में लाने वाले उद्योगों से जब बचे हुए गंदे जल को बाहर निकाला जाता है तो उसमें कई हनिकारक पदार्थ मिले होते है जो जल को प्रदुषित करता है। पृथ्वी पर अब सतही जल की कमी पाई गयी है। जिसके कारणवश अब उद्योगों को अपनी प्रक्रियाओं के लिए भूमिगत जल को उपयोग में लाना पड रहा है जिससे जल प्रदुषण फैल रहा है। इन हनिकारक पदार्थो के बाहर निकलने से पेड़-पौधो, जमीन के उपजाऊ पन पर भी बूरा असर पड़ा है। उद्योगों से निकलने वाले इन सभी हनिकारक पदार्थो से कई प्रकार के रोग होते है जिससे की जनहानि होती है।

प्रदूषण उन्मूलन के उपाय

उद्योगो से होने वाले प्रदुषण के उन्मूलन अर्थात् निराकरण कुछ इस प्रकार किया जा सकते है। उद्योगो को कही भी स्थापित करने से पहले उस स्थान का निरिक्षण करना अति आवश्यक है। वह अधिकृत वन क्षेत्र या कृषि भूमि नहीं होनी चाहिए। उद्योग जहां लगाया जा रहा है वह स्थान इतना बडा होना चाहिए की वहां बगीचा लगाया जा सके जिससे की वायु में शुद्धता आ सके तथा मृदा के कटाव बचाव हो सके। उद्योगों को ऐसी जगह स्थापित करनी चाहिए जहां पर की हवा का वेग समानान्तर हो जिससे की उद्योगों द्वारा बाहर निकाली गई गैसे जल्दी जल्दी बहकर निकल जाये।

उद्योगों के आस-पास प्रच्चुर मात्रा में जल उपलब्ध होना चाहिए। उद्योगों में काम में आने वाले कच्चे माल एवं उसके बाद तैयार माल को लाने ले जाने के लिए परिवहन की अच्छी सुविधा होनी चाहिए।

सीमेन्ट उद्योग

निर्माण कार्यो जैसे- घर कारखाने, पुल सडके हवाई अड्डा बांध तथा अन्य व्यापारिक प्रतिष्ठानों के निर्माण में सीमेन्ट आवश्यक है। इस उद्योग को भारी व स्थल कच्चे माल जैसे चूना पत्थर सिलिका और जिप्सम की आवश्यकता होती है। रेल परिवहन के अतिरिक्त इसमें कोयला तथा विद्युत उर्जा भी आवश्यक है।

पहला सीमेन्ट उद्योग सन् 1904 में चैन्नई में लगाया गया। स्वतंत्रता पश्चात् इस का प्रसार किया गया गुणवत्ता में सुधार किया गया, जिससे भारत की बड़ी घरेलु मांग के अतिरिक्त, पूर्वी एशिया, मध्यपूर्व अफ्रिका तथा दक्षिण एशिया के देशों में मांग बढ़ी है।

यह उद्योग उत्पादन तथा निर्यात दोनों ही रूपों में प्रगति पर है। इस उद्योग को बनाए रखने के लिए पर्याप्त घरेलु मांग और पुर्ति में वृद्धि करने का प्रयास किए जा रहे है।

उद्योग द्वारा उत्सर्जित पदार्थ जो प्रकृति में मौजूद संसाधनों द्वारा मिलते है व मानवीय पर्यावरण में विभिन्न उत्पाद एवं साथ ही प्रदूषण को भी बढाते है। उद्योगो में यह क्षमता है ये पर्यावरण का विकास भी कर सकते है और पतन भी कर सकते है अथवा एक साथ दोनों ही करने की क्षमता भी रखते है। औद्योगिक प्रदूषण तथा पर्यावरण निम्नीकरण यद्यपि उद्योगों की भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है, तथापि इनके द्वारा बढने भूमि वायु, जल तथा पर्यावरण प्रदूषण को भी नकारा नहीं जा सकता है। उद्योग 4 प्रकार के प्रदूषण के लिये उत्तरदायी है-

(क) वायु (ख) जल (ग) भूमि (घ) ध्वनि प्रदूषण करने के लिए उद्य़ोग के ताप विद्युतगृह भी सम्मिलित है।

वायु प्रदुषण- अधिक अनुपात में अनचाही गैसों की उपस्थिति जैसे सल्फर डाइ ऑक्साइड तथा कार्बन मोनोआक्साइड वायु प्रदूषण का कारण है। वायु में निलंबित कणजुका पदार्थो में ठोस व द्रवीय दोनों ही प्रकार के कण होते है। जैसे धूलि, स्प्रे, कुहासा तथा धुआं। कई उद्योग छोटे बडे कारखाने प्रदुषण के नियमों का उल्लघंन करते हुए धुआं निष्कासित करते है। जहरीली गैसो का रिज़ाव बहुत भयानक तथा दूरगामी प्रभावों वाला हो सकता है।

जल प्रदुषण- उद्योगों द्वारा कार्बनिक तथा अकार्बनिक अपशिष्ट पदार्थो के नदी में छोडने से जल प्रदूषण व्यापत होता है। इसके कारक -कागज, लुगदी, रसायन, वस्त्र तथा रंगई उद्योग, तेल शोधन शालाएं, चमडा उद्योग तथा इलेक्ट्रोप्लेटिंग उद्योग है। जो रंग अपमार्जक अमल लवण, तथा भारी धातुएं जैसे सीसा पारा कीटनाशक, उर्वरक कार्बन प्लास्टिक और रबर सहित कृत्रिम रसायन आदि जल में वाहित करते है। भारत के मुख्य अपशिष्ट करते है। भारत के मुख्य अपशिष्ट पदार्थो में फ्लाईएश फोस्फो-जिप्सम तथा लोहा इस्पात की अशुद्धिया है। तापीय प्रदूषण- जब कारखानों तथा तापघरों से गर्म जल को बिना ठंडा किए ही जवियो तथा तालाबों मे छोड दिया जाता है, तो जल में तापीय प्रदूषण होता है। जलीय जीवन पर इसका क्या प्रभाव होगा बताएं।

परमाणु उर्जा संयंत्रो के अपशिष्ट व परमाणु शास्त्र उत्पादक कारखानों से कैंसर, जन्मजात विकास तथा अकाल प्रसव जैसी बीमारियां होती है। मृदा व जल प्रदूषण आपस में संबंधित है। मलेब का ढेर विशेषकर कांच, हानिकारक रसायन, औ़द्योगिक बहाव पैकिंग, लवण तथा कूडा-कर्कट मृदा को अनुपजाउ बनाता है। वर्षा जल के साथ ये प्रदुषक जमीन से रिसते हुए भूमिगत जल तक पहुंच कर उसे भी प्रदषित कर देते है।

ध्वनि प्रदूषण- ध्वनि प्रदूषण से खिण्ठाता तथा उत्तेजना ही नहीं वरन् श्रवण असमता, हृदय गति, रक्तचाप तथा अन्य कायिक व्यवस्थाएं भी बढती है अनचाही ध्वनि उत्तेजना व मानसिक चिंता का स्त्रोत है। औद्योगिक तथा निर्माण काय्र कारखानों के उपकरण, जैनरेटर लकडी चीटने के कारखाने गैस यांत्रिकी तथा विद्युत त्रिल की अधिक ध्वनि उत्पन्न करते है।

International Journal of Professional Development

Vol.11,No.1, Jan-June2022 ISSN: 2277-517X (Print),2279-0659 (Online)

उद्योगो के अवस्थिकरण के कारक

क्र.सं	अवस्थिकरण	संख्या	प्रतिशत
1	कच्चे माल की उपलब्धि	150	75
2	ऊर्जा की उपलब्धि	165	82.5
3	कुशल तथा सस्ते मजदूर	155	77.5
4	पूंजी	180	90
5	उद्योगपति	150	75
6	बाजार	190	95
7	प्रबंधन क्षमता	185	93
8	जलवायु	172	86
9	राजनैतिक स्थिरता	156	78
10	मूलभूत सुविधाएं	198	99
11	ढुलाइ भाडो की सुविधाएं	186	93

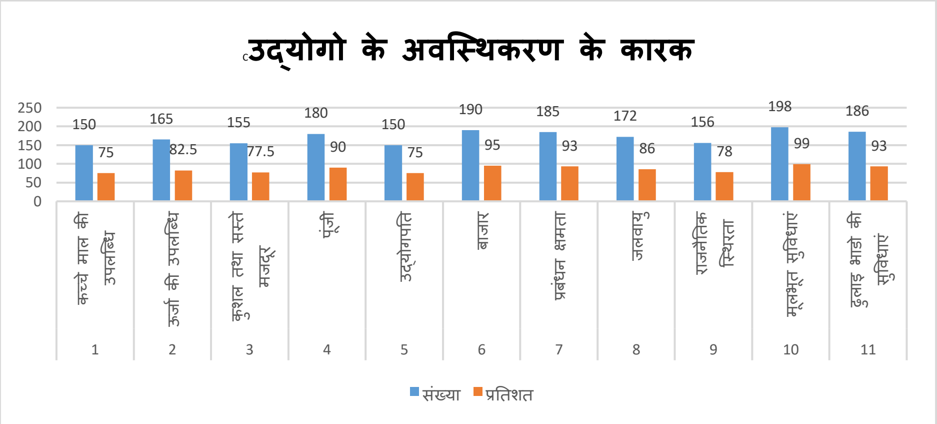

उद्योगो के अवस्थिकरण के लिए भी कुछ कारको की आवश्यकता होती है। उद्योगो पति जो कि जोखिम उठाने को तैयार हो। बाजार घरेलु एवं अन्तर्राष्ट्रीय दोनों मूलभूत सुविधाएं जैसे बिजली, पानी और सडक की आवश्यकताएं होती है। उपर्युक्त सारणी में अवस्थिकरण की सभी कारको को दर्शाया गया है।

उद्योगो की समस्याएं

क्र.सं	समस्याएं	संख्या	प्रतिशत
1.	मूलभूत सुविधाओं का अभाव	140	70
2	कच्चे माल की कमी	120	60
3	राजकीय क्षेत्र में घाटा	115	57.5
4	औद्योगिक इकाईयों का घाटा	90	45
5	उद्योगो का क्षेत्रीय सकेन्द्रण	152	76
6	कृषि पर आधारित उद्योगो के लिए कच्चे माल कीकमी	172	86
7	पुंजी का अभाव	155	77.5
8	सरकारी नीतियां	78	39

ऐसा नहीं है कि उद्योग सिर्फ उन्नति ही करते है या उन्हें कभी कोई परेशानी नहीं हो सकती या कोई समस्या उन्हें नहीं आती। उद्योगो के सामने भी कई बडी चुनौतिया आती है। उद्योगो के पास मूलभूत सुविधाओं का अभाव, कच्चे माल की कमी, पूंजी का अभाव, उद्योग धन्धो का घाटे में जाना कई समस्याएं आती है जो उद्योगो के विकास में बाधक बनती है।

उद्योगो के घाटे के कारण

International Journal of Professional Development
Vol.11,No.1, Jan-June2022 ISSN: 2277-517X (Print),2279-0659 (Online)

क्र.सं	कारण	संख्या	प्रतिशत
1.	कमजोर प्रबंधन	40	20
2.	कच्चे माल एवं ऊर्जा संसाधनों का दुरूपयोग	10	5
3.	महंगाई	25	12.5
4.	उत्पादन की मांग में कमी	80	40
5.	श्रमिको की हडताल	45	22.5
	कुल	200	100

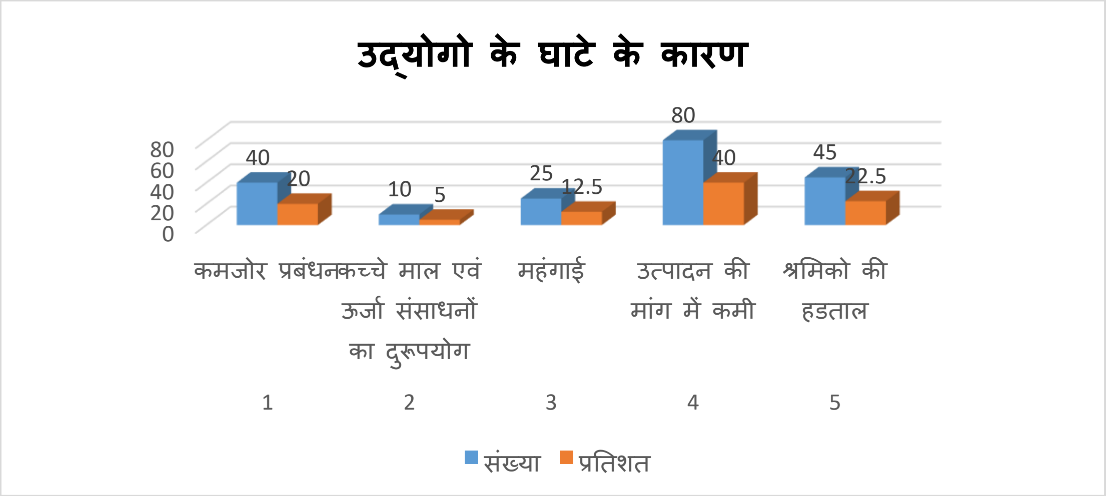

उद्योगो के समस्याएं में एक प्रमुख समस्या है उद्योगो का घाटे में जाना। उद्योगो के घाटे में जाने के भी कई कारण हो सके है। उपर्युक्त सारणी में उद्योगो के घाटे में जाने के उन्हीं कारणो को दिखाया गया है। उद्योगपतियो का कमजोर प्रबन्धन, श्रमिको की बार-बार हडताल से उत्पादन का रोकना कच्चे माल की मंहगा होना जिसके कारण उत्पादित वस्तु का भी महंगा होना/ मांग की कमी का होना।

उद्योगो से होने वाले प्रदूषण

क्र.सं	प्रदूषण	संख्या	प्रतिशत
1.	वायु	190	95
2.	जल	189	94.5
3.	मृदा	120	60

उद्योगों के अपशिष्ट पदार्थो से पर्यावरण प्रदुषण बढ़ रहा है जिनमे वायु, जल एवं मृदा प्रदुषण सम्मिलित है। और सडक की आवश्यकताएं होती है। उपर्युक्त सारणी में अवस्थिकरण की सभी कारको को दर्शाया गया है।

प्रदूषण के कारण एवं स्त्रोत

क्र.सं	कारण एवं स्त्रोत	संख्या	प्रतिशत
1.	औद्योगिक गतिविधि	20	10
2.	वाहन	40	20
3.	तीव्र औद्योगिकरण एवं शहरीकरण	25	12.5
4.	जनसंख्या अतिवृद्धि	80	40
5.	जीवाश्म ईंधन दहन	25	12.5
6.	कृषि अपशिष्ट	10	5
7.	कुल	200	100

पर्यावरण प्रदुषण के कई कारण है। प्रदुषण कई स्त्रोत में फैल सकता है। जिसके प्रमुख कारण है उद्योगो का अपशिष्ट उत्सर्जन वाहनों एवं नई नई तकनीकों के विकास शहरीकरण जनसंख्या का अत्यधिक होना कृषि अपशिष्ट जैसे पौध बढाने के लिए उपयोग में लाई गई दवाई कीटनाशक आदि। ऐसे कई कारण एवं स्त्रोत है जो पर्यावरण प्रदुषण को बढावा देते है।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

क्र.सं	आवश्यकता	संख्या	प्रतिशत
1	संसाधनो के उपयोग में वृद्धि	98	49
2	अत्याधिक उपयोग संसाधनो का विनाश	27	13.5
3	जीव जन्तुओ के आश्रम को बचाना	34	17
4	ओजोन परत को बचाना	41	20.5
	कुल	200	100

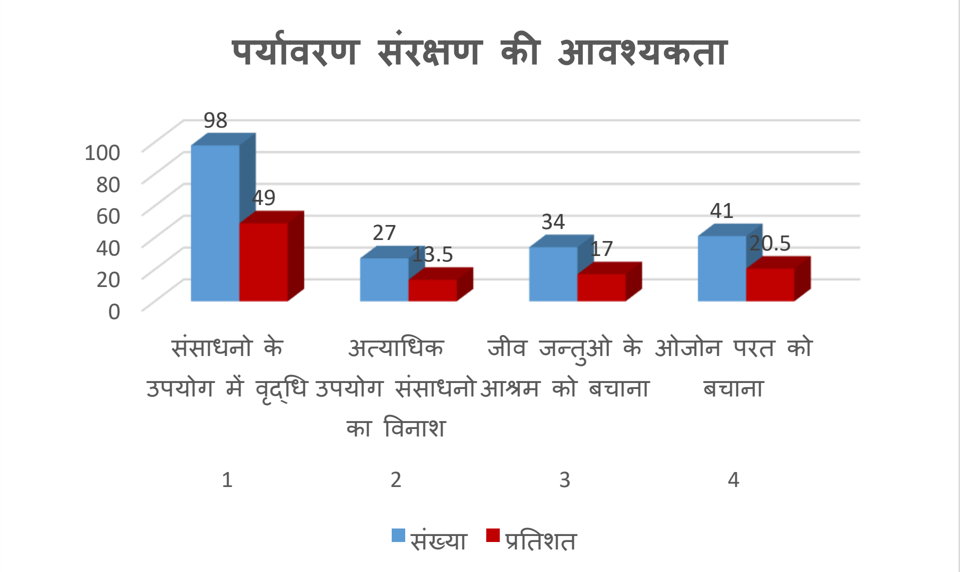

जलवायु परिवर्तन के कारण हरितगृह प्रभाव और वैश्विक ताप मे वृद्धि, ओजोन परत का क्षय होना, अन्तिम वर्षा होना भुस्कान मृदा का क्षरण आदि होता है जिसे प्रर्यावरण का प्रदूषित होना कहते है मनुष्य ने अपने और पर्यावरणीय स्वास्थ्य की कीमत पर प्रकृति के धन का दोहन किया है।

पर्यावरण संरक्षण का महत्व

क्र.सं	प्रदुषण	संख्या	प्रतिशत
1.	पर्यावरण जीवन का आधार	40	20
2.	पर्यावरण पुजनीय माना गया है	20	10
3.	प्रकृति के साथ मानवीय संबंध विकसित	20	10
4.	मूलभूत आवश्यकताएं पर्यावरण की देन	120	60
	कुल	200	100

मनुष्य पूर्ण रूपेण प्रकृति पर निर्भर करता है। पर्यावरण ही मनुष्य जीवन का आधार है। प्रकृति मनुष्य के पुजनीय है पर्यावरण का महत्व मनुष्य पहले नहीं समझा अगर समझ जाता तो पर्यावरण आज सुरक्षित होता है। आज पर्यावरण को नष्ट करने के पीछे मनुष्य का ही एक बहुत बडा हाथ है प्रकृति हमारी अन्नदाता है। जल हमें प्रकृति देती है। जीवित रहने के लिए प्राणवायु हमें प्रकृति देती है।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय

क्र.सं	उपाय	संख्या	प्रतिशत
1.	जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण	100	50
2.	प्रदूषण पर नियन्त्रण	28	14
3.	संसाधनों का उपयोग आवश्यकता के अनुरूप करे	14	7-5
4.	अपशिष्ट पदार्थो को सही तरीके से दोहन	58	29
	कुल	200	100

अगर हम चाहते है कि हमें व हमारी आने वाली सभी पीढीयों की प्रकृति के सभी तत्वों का लुत्फ उठाने का मौका मिले तो हमें ही कोशिश करने होगी इसे बचाने की पर्यावरण को संरक्षण के उपाय हमें ही लागू करने होगे जिसमें सबसे जरूरी उपाय है जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण करना। इस उपाय से ही पर्यावरण प्रदूषण का आधी समस्या दूर हो जायेगी।

पर्यावरण संरक्षण की व्यूह रचना

क्र.सं	व्यूह रचना	संख्या	प्रतिशत
1.	उद्देश्यो का निर्धारण	156	78
2.	विकासशील आधार	140	70
3.	कार्यवाही की वैकल्पिक विधियो की पहचान	188	94
4.	विकल्पो का मूल्यांकन	172	86
5.	विकल्पो का चुनाव	142	71
6.	योजना का लागू करना	150	75
7.	अनुवर्तन	166	83

किसी भी कार्य को करने से पहले हमें उसकी व्यूह रचना या नियोजन या कार्यान्वयन की प्रणाली तैयार कर लेनी चाहिए। क्या करना है। कैसे करना है? कहां करना है? कब करना है? क्यो करना है? कितना करना है? इन सभी का ध्यान रखते हुए एक व्यूह रचना निर्धारित करनी होती है यही व्यूह रचना हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए भी हमंे तैयार करनी होगी और कुछ कडे कदम इसके लिए अपनाने होंगे।

स्वास्थ्य पर प्रदूषण का प्रभाव

क्र.सं	स्वास्थ्य	संख्या	प्रतिशत
1.	सहमत	170	85
2.	असहमत	10	5
3.	अनिर्मित	20	10
	कुल	200	100

पर्यावरण प्रदूषण सबसे अधिक बूरा प्रभाव अगर कुछ डालता है तो वह है मानव संरक्षण, संसाधन, जीव जन्तुओं एवं पैड पोधो के स्वास्थ्य को खराब करता है किसी भी प्रकार का प्रदूषण हो किसी न किसी रूप में वह हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव ही है। जैसे श्वसन में परेशानी त्वचा, सम्बन्धी रोग, आंखो के रोग कई बीमारियां इतनी बढी हो जाती है कि कई बार मृत्यु तक हो जाती है। मूलभूत

www.ijpd.co.in

आवश्यकताओं की कमी हो जाती है प्रदूषण के कारण उनमें भी कमी आ जाती है जिसके कारण भी स्वास्थ्य प्रभावित हो जाता है।

औद्योगिक प्रदूषण के उपाय

क्र.सं	उपाय	संख्या	प्रतिशत
1.	उद्योगो के स्थान का चयन	180	90
2.	उद्यागो के मध्य दूरी (कम से कम 25 किमी)	112	56
3.	विमनियो की ऊचाई एवं प्रयोग	198	99
4.	अपशिष्ट पदार्थो को पुनः काम में लेना	162	81
5.	जल एवं शख्त अपशिष्टो की अवधारणात्मक सक्रीया	166	83

उद्योगो के स्थान को चयन ऐसा होना चाहिए जहां जनसंख्या के बराबर हो। **2** उद्योगो के मध्यम कम से कम **25** किमी की दूरी होनी चाहिए। परन्तु ऐसा सम्भव कम ही हो पाता है। चिमनियों की ऊँचाई अधिकाधिक होनी चाहिए और प्रयोग सही तरीके से होना चाहिए। अपशिष्टो को री-साईकल कर पुनः उपयोग लायक बनाया जाना चाहिए।

उपसंहार

उपर्युक्त अध्याय औद्योगिक समस्याओं एवं पर्यावरण संरक्षण पर आधारित रहा। उद्योगों से संबंधित समस्याएं क्या क्या रही, उन्हें दूर करने के उपाय, पर्यावरण संरक्षण का महत्व, उपाय व्यूह, रचना आदि को दर्शाया गया। अगला अध्याय अष्टम अध्ययन के निष्कर्ष से सम्बन्धित है।

References

1. Tjord, W. (1956): Location and Space economy. A general theory relating to industrial location, market tren, land use, trade and Urban Structure, Ne York.
2. Kaushik. S.D.(1985): Geographical thought & Methodology, Meerut
3. Zip, G.K. Kuman Behaviour and the Principle of least effort, Cambridge
4. Pred. A (1967) Behaviour and Location -foundation for Geographic and Dynamic Loction. Theory, Part 1 &ILL and studies in Geography, No. 27
5. Weber, A Theory of the Locatin of Industries, Shikago.
6. Riley, R.C.(1973): Industrial Geography, London
7. Rostove, W: The studies of Economic Projects, Cambrige.
8. Rathford J.: Jew viewpoint in Economic Geography, sidany.
9. Losh, A. (1954): The Economics of Location, New Hevan.
10. Semulation, PA (1964):Economies - An Introductory Analysis London
11. Stamp, L.D.(1960) Our Developing World, Favour and Favour.

www.ijpd.co.in